समानीकरण- भोजन व्यवस्था की एक नई प्रक्रिया

जीएचआई का एक वर्णाशं

सभी उपभोक्ताओं के लिये सुरक्षित और स्वस्थ खाद्य उत्पादों की वैश्विक उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए खाद्य सुरक्षा नियमों और कानून के विज्ञान पर सर्वसम्मति प्राप्त करना।

विभिन्न देशों के बीच खाद्य सुरक्षा नियमों में निहित असमानताओं के कारण खाद्य व्यापार में बाधा पडती है, जिससे ऐसी दुनिया में, जिसमें एक अरब लोगों के पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं है, अच्छे पौष्टिक भोजन का विनाश हो जाता है। इसके अलावा, यह विवादित नियम खाद्य आपूर्ति श्रृंखला से सम्बन्धित नई प्रौद्योगिकियों में नवाचार और निवेश को बाधित करते हैं, ऐसी प्रौद्योगिकियां, जो उत्पादन क्षमता में वृद्धि करती हैं, खाद्य खतरों के जोखिम को कम करती हैं, और वैश्विक बाजारों में वितरण क्षमताओं में सुधार लाती हैं। अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर खाद्य पदार्थों को अनुपयुक्त घोषित करने के, प्रतिबंध लगाने या नष्ट करने के निर्णय हर दिन लिए जाते हैं, इस निर्धारण की वजह से कि खाद्य पदार्थ मानव के लिए असुरक्षित है। बेशक, खाद्य नियत्रंण, यात्रा और भंडारण के दौरान खाद्य पदार्थों में मिलावट की हमेशा संभावित आशंका रहती है, और मिलावटी भोजन को आगे वितरित नहीं किया जाना चाहिए। हालांकि, तथ्य यह है कि खाद्य सुरक्षा नियमों में मतभेदों के कारण हर साल सुरक्षित और अच्छे खाद्य पदार्थों की एक बड़ी मात्रा नष्ट हो जाती है, जिसे वैज्ञानिक रूप से उचित नहीं माना जा सकता है।

विश्व के कई खाद्य वैज्ञानिक यह स्वीकार नही कर सकते हैं कि दुनिया में एक अरब लोग भूखे हों जबकि सुरक्षित और पौष्टिक भोजन को नष्ट किया जाये। **परिणाम स्वरूप वैश्विक समानीकरण उपक्रम (जी एच आई),** एक वैज्ञानिक संगठनों और वैश्विक वैज्ञानिकों का गैर-लाभकारी संजाल, जो वैश्विक खाद्य सुरक्षा नियमों और कानूनों के सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं, को आधिकारिक तौर पर 2007 में स्थापित किया गया था।

वस्तुतः खाद्य विनियम आंतरिक रूप से गलत नहीं हैं, लेकिन कई विज्ञान पर आधारित नहीं है। वैश्विक स्तर पर सामंजस्यपूर्ण, विज्ञान आधारित खाद्य सुरक्षा नियमों के अभाव में, पूरी दुनिया में लाखों लोगों के लिये आवश्यक पोषक भोजन को अनिवार्य रूप से नष्ट कर दिया जा सकता है, इसके बावजूद कि वास्तव में यह उपभोग करने के लिए सुरक्षित है।

समस्या क्या है? संचार में वियोजन

वैज्ञानिक तथ्यों की कोई कमी नहीं है। खाद्य सुरक्षा पर हजारों सहकर्मी-समीक्षा वाले वैज्ञानिक प्रकाशन उपलब्ध हैं और दुनिया भर में हर दिन अधिक से अधिक तथ्यों का उत्पादन होता है। वह समस्या जिसको संबोधित करने की आवश्यकता है, वह है वैज्ञानिक तथ्यों का उचित उपयोग और हितधारकों के लिए उसका संचार। वैज्ञानिक परसपर तो अच्छी तरह से संवाद करते हैं लेकिन उनके साथ जो निर्णायक नियमों को प्रभावित, विकसित या स्थापित करते हैं, अपर्याप्त सचांर होता है। ये नीति निर्माता और राजनेता, आम जनता, सचांर माध्यम, प्रचारक और सक्रियवादी ग्राहक हैं।

रेखाचित्र ए

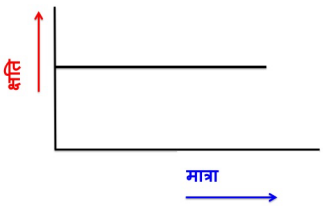

विषाक्तता की अवधारणा, या विषाक्त पदार्थ को परिभाषित करना, ऐसे अपर्याप्त संचार का एक स्पष्ट उदाहरण है। सैकड़ों वर्षों से, यह ज्ञात है कि "खुराक जहर बनाता है" जैसे कि एक पदार्थ अपने विषाक्त गुणों से जुड़े हानिकारक प्रभाव को केवल तब उत्पन्न करेगा जब यह शरीर के भीतर एक संवेदनशील सघनता की मात्रा से अधिक हो। आविष विज्ञान के पिता पैरासेल्सस ने इस सिद्धांत को 16 वीं शताब्दी में खोजे गये नैदानिक साक्ष्य पर आधारित किया। हाल ही में, ब्रूस एम्स और एडवर्ड कैलाब्रेसे समेत कई प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पत्रिकाओं में आविष विज्ञान के इस मूल सिद्धांत को साबित करने से सम्बधित शोध को प्रमाणित और प्रकाशित किया है। हालांकि, वैज्ञानिक वर्गों के बाहर, "खुराक जहर बनाता है" यह कथन कम समझ में आता है और गलतफहमी पैदा करता है, जैसा कि विवादित खाद्य सुरक्षा नियमों से प्रमाणित होता है और ऐसी बातों का प्रचारण शीर्षक पंक्तियों के अंतर्गत होता है जो "सुरक्षित" भोजन के बारे में गलत धारणा पैदा करें।

रेखाचित्र बी

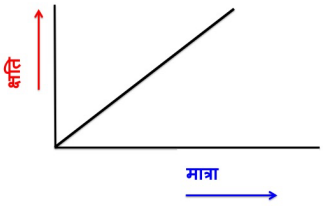

बायीं तरफ दिये गये सरल रेखाचित्र इन गलतफहमी को चित्रित करते हैं:

रेखाचित्र ए में आम जनता और राजनेताओं व नीति निर्माताओं के अन्य प्रभावकों द्वारा की गई विषाक्तता की व्याख्या दर्शायी गई है। एक विषाक्त पदार्थ किसी भी मात्रा में हानिकारक हो सकता है अतः ऐसा सोचा जाता है कि अगर पदार्थ पूरी तरह से निष्कासित किया जाये या अनुपस्थित हो तो क्षति को रोका जा सकता है।

रेखाचित्र बी राजनेताओं और नीति निर्माताओं द्वारा विषाक्तता की व्याख्या दिखाता है, जो बदले में नियामकों को प्रभावित करते हैं। खुराक की मात्रा जितनी भी अधिक हो, वह स्वास्थ्य के लिए उतनी ही हानिकारक हे

सकती है, इसलिए आंतरिक जहरीले गुणों की बहुत कम सांद्रता वाले पदार्थों को स्वीकारा जाता है, जिससे कम से कम लोगों (यानी, मतदाताओं) को हानिकारक स्वास्थ्य परिणाम का अनुभव हो।

रेखाचित्र सी

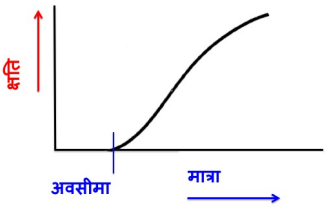

ग्राफ सी आविष विज्ञानियों की सबूत-आधारित राय दिखाता है। कई पदार्थों के लिए, स्थिति ऐसी ही है जैसी पेरासेलसस व्दारा खोजी गयी थी। यदि खुराक बहुत अधिक है, तो क्षति हो जाती है, लेकिन वहां एक सीमा भी है जिसके नीचे कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। दूसरे शब्दों में, एक निश्चित खुराक के नीचे, कोई नुकसान नहीं होगा। उदाहरण के लिए, मानव शरीर में, यकृत और गुर्दे जैसे अंग प्रतिकूल पदार्थों को किसी तरह का प्रभाव होने से पहले ही विषरहित कर देते हैं। कुछ पदार्थों के लिए, बहुत कम सघंटन भी स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो सकता है, जैसा विटामिन और खनिजों के मामले में होता है। शरीर में विटामिन ए या लौह जैसे आवश्यक पोषक तत्वों में से किसी एक की कमी या अधिभार से बीमारी हो सकती है और यह जानलेवा भी हो सकता है (रेखाचित्र डी)।

रेखाचित्र डी

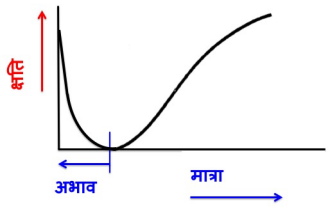

यह रेखाचित्र साथ में कुछ अपसंचार और गलतफहमी दर्शाते हैं जो विश्व में गैर-विज्ञान-आधारित और विरोधाभासी नियमों के विकास को बढावा देते हैं, और सुरक्षित और पौष्टिक भोजन के विनाश का कारण बन सकते हैं। यह ऐक तथ्य यह है कि सभी खाद्य पदार्थों में स्वाभाविक रूप से ऐसे पदार्थ होते हैं जो आंतरिक रूप से खतरनाक होते हैं, और इनकी मात्रा बहुत अधिक होने पर हानिकारक हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, काफी मे दर्जनों जीनोविषयक पदार्थ होते हैं, फिर भी इस बात का कोई सबूत नहीं है कि जो लोग मध्यम मात्रा में कॉफी पीते हैं, उनमें कैंसर का अधिक फैलाव, उनकी तुलना में, जो नहीं पीते हैं, होता है, । कॉफी (या आलू, सेब, इत्यादि) में विषाक्त पदार्थों की या खाद्य पदार्थों में रासायनिक अवशेषों की केवल मौजूदगी से यह आवश्क नहीं है कि खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उनकी कुल अनुपस्थिति को अनिवार्य करने के नियमों को बनाया जाये।

जीएचआई - सम्बन्ध बनाना और सर्वसम्मति प्राप्त करना

जीएचआई की प्राथमिकताओं में से एक यह है खाद्य सुरक्षा विज्ञान के द्रढ सिद्धांतों को इकट्ठा करके उनका संचार प्रभावशाली व्यक्तियों और निर्णय निर्माताओं, आम जनता, समाचार पत्र, राजनेताओं, नीति निर्माताओं और नियामक प्राधिकरणों के लिए किया जाये। इसका उद्देश्य समझ में सुधार करना और सभी हितधारकों को बेहतर तरीके से सूचित करना है ताकि सही वैज्ञानिक अवधारणाएं, न कि राजनीतिक लाभ या प्रचार माध्यम सभी देशों में सार्थक, सामंजस्यपूर्ण खाद्य सुरक्षा कानून और विनियमन तैयार करने का आधार बनें। वैज्ञानिक समुदाय के भीतर सर्वसम्मति बनाने के लिए जीएचआई कार्यकारी समूह की बैठकों को सुविधाजनक बनाने के अलावा, वैज्ञानिक संचार के लिए समर्पित है जो संक्षिप्त, समझने में आसान हो और स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जा सके। संचार क्षेत्र में सक्रिय स्वयंसेवकों की मदद से, जीएचआई विभिन्न शैक्षणिक सामग्रियों, संसाधनों और संचार साधनों को विकसित करने के लिए काम कर रहा है जो पूरी दुनिया में उपलब्ध हैं। इसके अलावा, कई जीएचआई सदस्य राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय लोकप्रिय समाचार पत्रों में लेख और साक्षात्कार का योगदान करते हैं, और सरकारी देशों या क्षेत्रों के लिए सरकारी जीएचआई राजदूत के रूप में कार्य करते हैं, स्थानीय स्तर पर जीएचआई और सामंजस्य के बारे में जानकारी साझा करते हैं और वितरित करते हैं।

वैश्विक समानीकरण उपक्रम और विज्ञान-आधारित वैश्विक खाद्य सुरक्षा नियमों के सामंजस्य के माध्यम से भोजन व्यवस्था की ऐक नई प्रकिया के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया हमें ऑनलाइन यहां देखें- www.globalharmonization.net.

जमुना प्रकाश द्वारा अनुवादित